JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue

JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)

An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मिथिला की लोक चित्रकला का स्वरूप

शोध शीर्षक

शोधार्थी–भावना कुमारी (इतिहास विभाग) बी.एन.एम.यू. मधेपुरा, बिहार

शोध निर्देशक–डॉ. प्रभाकर कुमार, (असिस्टेंट प्रोफेसर)

B-N-M-V College, साहुगढ़, मधेपुरा

सार

मिथिला की लोक चित्रकला भारत के बिहार और नेपाल के मिथिला क्षेत्र की एक पारंपरागत भारतीय चित्रकला शैली है, जो मुख्य रूपसे महिलाओं द्वारा बनाई जाती है। शुरूआत में दीवारों पर धार्मिक रूप से प्रयोग में लाई जाती थी, अब यह कपड़े और कागज पर भी बनाये जान लगे हैं। इसमें प्राकृतिक रंगों का प्रयोग होता है, और इसमें प्राकृतिक वस्तुएँ पुराण संबंधी कथाएं और सामाजिक व्यवहार सम्मिलित हैं। आज इस लोक चित्रकला ने विश्व कला भुवन में एक क्रांति सी ला दी है। भारत का यह एक गैर आदिवासी लोककला है, जिसमें सांस्कृतिक भावना अत्यधिक मात्रा में है। इसी कारण से यह धार्मिक व सांस्कृतिक मौके पर भूमि व दीवार पर बनायी जाती है और इसके प्रति आकर्षण दिनों दिन बढ़ती जा रही है। मिथिला की लोक चित्रकला को सरकारी मान्यता 1970 में जगदम्बा देवी को मिले राष्ट्रपति पुरस्कार के बाद मिली। इसी वर्ष जयन्ती जनता एक्स रेलगाड़ी में मधुबनी पेंटिग्स को एक चलते–फिरते संग्राहलय के रूप में दर्शाया गया, जिससे देशी–विदेशी कला विशेषज्ञ अपने आप ही इस ओर आकर्षित हो गये। 1970 में ही महासुंदरी देवी और सीता देवी को मिले राष्ट्रीय पुरस्कार ने इस कला शैली को और ख्याति प्रदान की। इस शोध पत्र का उद्देश्य मिथिला लोक चित्रकला के स्वरूपों का अध्ययन और धार्मिक प्रभाव पर प्रकाश डालना है। इसके योगदान का वर्णन करना है

मुख्य विंदुः–

सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक।

परिचय

मिथिला लोक चित्रकला प्राचीन काल से अपनी स्वतंत्र पहचान बनाए हुए है। "आर्यों के आने से पहले से यहाँ संस्कृति विद्यमान थी। मिथिला की ये लोक चित्रकला उस संस्कृति का प्रमाण है, जो कई वर्षों से यहाँ के लोक जीवन में प्रवाहित हो रहा है"। अत्याधिक प्राचीन ग्रंथ "ज्योतिरीश्वर ठाकुर के वर्ण रत्नाकर में भी मधुबनी शैली के चित्रों के लेखन का उल्लेख है"। श्री जीवानन्द ठाकुर ने अपने भित्ति–चित्र प्रकाश नामक लेख में लिखा है वैदिक काल से आज तक इसका लगातार विकास हुआ है।

मिथिला की लोक चित्र यहाँ के लोगों के समूह पर छायी हुई है। चौदहवीं सदी के शुरूआत से ही मंदिरों के पत्थरों पर साधारण चित्रकारी देखी गई है। साथ ही ईंटों पर तांत्रिक चित्र भी मिलते हैं। डॉ. अयोध्यानाथ झा विश्व के मानचित्र पर इस शैली को लाने के विषय में लिखते हैं "डब्लू–जी. आर्चर ने अपनी पुस्तक प्दकपंद च्वचनसंत च्पदजपदह च–89 के द्वारा इस कला को 1934 में दुनिया के सामने लाने का सफल प्रयास किया था।" यहाँ मिथिला की गौरवपूर्ण प्रथा एवं प्रतिष्ठा के तीन प्रबल स्तम्भ हैं लालित्यपूर्ण साहित्य, विलक्षण संस्कृति एवं आकर्षक लोककला। मिथिला में ये तीनों हीं धाराएं आज भी प्रभाहित हो रहा है।

साधारणतः मिथिला में दो ही गृह कलाओं का उपयोग प्राचीन काल से चली आ रही है। उत्तरी बिहार का यह क्षेत्र शुरू से हीं सास्कृतिक स्तर से समृद्धशाली रहा है। इस क्षेत्र के कुलीन ब्राह्मण व कायस्थ महिलाओं द्वारा कोमल रंग व रेखा सहित मानुष्य की रचना या भौतिक वस्तु, जैसे कि पेंटिंग, मूर्ति या फोटोग्राफ की रचना की जाती है वहीं दूसरी ओर अनुसूचित जाति व पिछड़े वर्ग के लोगों द्वारा कला में प्रयोग की जाने वाली वस्तुओं की रचना की जाती है।

मिथिला की लोक चित्रकला आज उन असीम जन समुदाय का परिचय कराने वाला है जो मिथिलांचल में रहते हैं। वर्तमान में मिथिला का कोई राजनैतिक सीमा मानचित्र में नहीं देखा जा सकता यद्यपि इसका इतिहास अत्याधिक प्राचीन और समृद्ध रहा है। मिथिला कभी भी युद्ध कौशल या वीर गाथाओं के लिए प्रसिद्ध नहीं रही बल्कि इसका राज दरबार हमेशा उच्च शैक्षणिक विकास व दर्शनार्थी से भरा रहा जो मनुष्य की सभ्यता के विकास की पहली आवश्यकता रही है। वर्तमान में मिथिलांचल की भूमि अपने स्वर्ण व सुन्दर इतिहास के लिए गौरव अनुभव करती है। मिथिला की यह भूमि उत्तर में नेपाल से लेकर दक्षिण में गंगा तक 100 मील चौड़ी तथा पूर्व में महानंदा से लेकर पश्चिम में गण्डिकी तक 250 मील में फैला है, जिसका कुल क्षेत्र सम्भवतः 30 हजार वर्गमील है। इस क्षेत्र में करीब 3.5 से 4 करोड़ मैथिली भाषी लोग रहते हैं, जो विश्व के सबसे अधिक घनत्व वाले क्षेत्रों में से एक है।

मिथिलांचल का यह क्षेत्र वर्तमान में कई जिलों का समुदाय है, जैसे दरभंगा, समस्तीपुर, सीतामढ़ी, मुजफ्फरपुर, शिवहर, सुपौल, सहरसा, पूर्णियाँ, वैशाली, किशनगंज, मधुबनी, चम्पारण, वेगुसराय, मुंगेर, भागलपुर आदि के साथ नेपाल का तराई क्षेत्र जनकपुर, धारांग, मलंगवा इनरवा, विराट नगर आदि। यहाँ की भूमि काफी उपजाऊ है, सिंचाई की व्यवस्था की जाए तो वर्ष में तीन चार फसल उगाई जा सकती है। यहाँ खनिज वन संपदा की कमी है, इसलिए ये कृषि प्रधान क्षेत्र है। यहाँ कहीं भी पत्थर या पहाड़ियाँ नहीं दिखाई पड़ती है। रेलवे लाइन के अलावा प्राप्त पत्थर को देव स्थल पर रखकर पूजा की जाती है। यानि मीलों तक समतल हरियाली से घिरा हुआ गंगा का उपजाऊ मैदान फैला हुआ है। यहाँ उपजाए जाने वाले फसलों में चावल, गेहूँ, गन्ना, मक्का, दलहन, तिलहन, कपास व नील प्रमुख हैं। मौसम के अनुसार सब्जियाँ व फलों को भी खूब उपजाया जाता हैं। यहाँ की आम लीची, केला, कटहल, जामुन, मखाना आदि अत्याधिक विख्यात है। इन प्राकृतिक आकर्षक वातावरण के होने पर भी भयानक गरीबी दिखाई देती है। लेकिन यहाँ लोग कला का लगातार रचना कर इसे सजीव रखे हुए हैं। यहाँ के अधिकतर विशिष्ट कलाकार अत्याधिक गरीब परिवार से हैं।

वर्तमान में मिथिलांचल की लोक कला शैली 'मधुबनी शैली' या मधुबनी पेंटिंग' के नाम से विख्यात हो रही है। वास्तविकता में मधुबनी मिथिला का एक छोटा सा भाग है। "डंकीनइंदप पे जीम ीतंतज संदक वि डपजीपसं". वर्तमान में यह बिहार व नेपाल के सीमा का एक जनपद है। साधारणतः वनस्पति बाग बगीचा के अधिकता या प्रचुरता के कारण ही प्राचीन काल में इसका नाम मधुबनी पड़ा था। जिसका शाब्दिक अर्थ मधुबन से लगाया जाता है। भारतीय चित्रकला का इतिहास आकर्षक व मधुरता के बिना भारतीय चित्रकला का इतिहास पूर्ण नहीं होता है। पेड़–पौधे, आकर्षक लेण्डरस्केप, हरे तोते, कबूतर, कोयल, बटेर, सुरीले लाल काले बुलबुल, सुन्दर नीलकण्ठ के फैले पंख, घास–फूस युक्त कच्चे घर लम्बे ताड़ के पेड़ फैले हुए वट व पीपल, शीशम की तांतों से ताक झांक सूर्य की किरणें आदि मिलकर इस क्षेत्र को प्राकृतिक आकर्षण प्रदान करते हैं।

इस शैली के लिए दूसरा प्रभावशाली क्षेत्र दरभंगा जो द्वारा बंग (क्ववत वि ठंदहंस) शब्द का अपभ्रंश है और यहीं से एक समय नेपाल व बंगाल के बीच व्यवसायिक कारोबार होता था। मुगल काल में यह मिथिला की राजधानी रही है और अंग्रेजों के समय तक यहाँ के शासक जमींदार दरभंगा महाराज कहलाते थे। इनके विस्तृत और सौन्दर्य महलें आज भी दरभंगा के साथ पूरे मिथिला की शोभा बढ़ा रहे हैं। जिनमें भारत सराकर का डाक प्रशिक्षण केन्द्र बेला पैलेस, ललित नारायण मिश्र मिथिला विश्वविद्यालय का प्राचीन भवन, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय का प्राचीन भवन, नरगौना पैलेस, चन्द्रधारी मिथिला संग्रहालय दरभंगा राज का किला आदि उल्लेखनीय हैं। ग्रामीण अंचलों के साथ दरभंगा का शहरी क्षेत्र भी नदी, तालाबों, बगीचों मीठी बोली व व्यवहार से आकर्षक है। इसके सन्दर्भ में दरभंगा नगर निगम का यह बोध वाक्य विवरण से संबंध रखने वाला प्रतीत होता है–

पग–पग पोखरि माछ, मखान, सरस बोल मुसकी मुखपान। विद्या वैभव शान्ति प्रतीक, ललित नगर दरभंगा थीक।

इसके अलावा नेपाल में जनकपुर क्षेत्र भी इस शैली के लिए नेपाल सहित दूसरे देशों में प्रचार प्रसार के साथ लगातार प्रसिद्धि संगृहीत कर रही है। पूरे भारत और नेपाल मिथिलांचल क्षेत्र ही मिथिला की लोककला शैली का क्षेत्र स्थल है यद्यपि मधुबनी दरभंगा, जनकपुर विशेष उल्लेखनीय है।

मिथिलांचल का इतिहास जितना पुराना है उतना ही समृद्धशाली। समाज के सभी क्षेत्र में यह अपनी प्रसिद्धि प्राप्त की है। प्राचीन भारत के राजनैतिक व सांस्कृतिक क्षेत्रों में मिथिला का अत्याधिक प्रभाव रहा है। इसने कई राजतंत्र व प्रजातंत्र को अनियमित रूप से बदलते हुए देखा है। मनुष्य के सोच और विचार के इतिहास में यह क्षेत्र अद्भुत बौद्धिक शक्ति की धनी रही है। मिथिला नरेश जनक, याज्ञवल्क्य, गौतम अक्षपद् (न्याय सूत्र के लेखक), कपिल (सांख्य दर्शन के

प्रवर्तक) कणांदा (वैशेषिक पद्धति को प्रतापादित करने वाले), जैमिनी (मिमांसा संस्थापक) तथा कई लोगों ने अपनी विद्वता से इस भूमि को सींचा है। मिथिलांचल से निकट वैशाली क्षेत्र प्रजातंत्र के लिए प्राचीन काल में विख्यात था जो बौद्ध एवं जैन धर्म व दर्शन के लिए भी प्रसिद्ध था। लेकिन छठी शताब्दी के बाद अन्य विद्वानों ने साहित्य व दर्शन विज्ञान पर अपने प्रभावशाली विचार देकर भारतीय संस्कृति को नयी दिशा प्रदान किया। इनमें अद्योत्करा (700 ई0), मण्डन मिश्र (800 ई0), वाचस्पति (844 ई0), उदयान (950 ई0) प्रभाकर, मिसारू मिश्र, गंगेश उपाध्याय (1200 ई0 संस्थापक नवन्याय शास्त्र), पक्षधर (1450 ई0) आदि उलेख्य हैं।

मिथिला वह भूमि है जहाँ से पहली बार आर्थिक विकास व स्वतंत्रता के लिए गाँधी जी ने अपना आन्दोलन शुरू किया था। परम्परागत उद्यम के प्रति जागरूकता व लगाव, यहाँ के परिश्रमी लोग व विशेषकर महिलाओं की धैर्य व कार्य कुशलता को देखकर उन्होंने पहले नील के किसानों को आर्थिक स्वतंत्रता दिलायी। बाद में महिलाओं को खादी में काम करने के लिए प्रोत्साहन दिया। फलस्वरूप सभी घरों में चरखे चलने लगे। यहाँ कि महिलाए सुन्दर, मजबूत व पतले धागे बनाती हैं, जिसे यज्ञोपवीत संस्कार के बाद ब्राह्मण व अन्य लोग हमेशा पहनते हैं। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार मिथिला की सभ्यता की शुरूआत आर्यों द्वारा की गई। मिथिला का उल्लेख अथर्ववेद में भी मिलता है, जिसमें मिथिला को उस समय की सबसे शक्तिशाली राज्य बताया गया है। इसके बाद मिथिला कला में अत्याधि प्रसिद्ध रही।

विद्यापति ने अपने गीतों में मिथिला का उल्लेख किया है। यहाँ करीब साढ़े तीन से चार करोड़ मैथिली भाषा बोलने वाले लोग हैं और वर्तमान में इस भाषा को भारत सरकार ने भाषा की अष्टम सूचि में सम्मिलित कर भारत की इस प्राचीन और साहित्य में समृद्ध भाषा को उपयुक्त स्थान दिया है।

मिथिला की भूमि हमेशा से बौद्धिक चिन्तन, दर्शन व साहित्य का केन्द्र रही है। बाल्मीकि के रामायण की तथा महाकवि कालिदास के प्रेम ग्रन्थों की रचना में भी भूमि का सहयोग रहा है। इन दोनों धर्मग्रन्थों और साहित्यिक काव्यकारों के बाद 14वीं शताब्दी में मिथिला के महाकवि विद्यापति ने श्रृंगार और भक्ति रस के हजारों काव्य रूपी गीतों की रचना जनसाधारण की भाषा मैथिली में की जो कि आज भी मिथिलावासी के मुख पर रहता है। वर्तमान में इनसे संबंधित लोक चित्र बनाये जाते हैं।

मिथिला से दो धर्म उत्पन्न हुए जो बौद्ध एवं जैन धर्म के रूप में विश्वप्रसिद्ध है। बौद्ध धर्म ने हिन्दु धर्म की विचारों को ही बदल दिया था। वेद व उपनिषद ने मांसाहार को निषेध नहीं किया था तो उसे बौद्ध ने उचित नहीं बताया। हालांकि अभी भी वहाँ बलि प्रथा प्रचलित है और उसे प्रसाद समझकर धर्म गुरू भी स्वीकार करते हैं। आदि शंकराचार्य की धार्मिक पराजय भी मण्डन मिश्र की पत्नी भारती द्वारा इसी भूमि पर हुई थी, जिस कारण से उन्हें गृहस्थ जीवन की जानकारी प्राप्त करने के लिए परकाया प्रवेश करना पड़ा था।

मिथिला का यह ऐतिहासिक दृष्टिकोण स्पष्ट नहीं होने पर भी यहाँ के पुराने तथ्य के आधार पर इतना तो कहा ही जा सकता है कि यह क्षेत्र हमेशा से बौद्धिक विकास और कला प्रस्तुती का केन्द्र रहा है।

उद्देश्य

- मिथिला लोक चित्रकला के स्वरूपों का अध्ययन करना
- धार्मिक प्रभाव पर प्रकाश डालना और इसके योगदान का वर्णन करना है।

समस्या का विवरण

मिथिला लोक चित्रकला की प्रमुख समस्याएँ उसके बाजारीकरण से उत्पन्न हुई है, जिसमें पथाओं का क्षय हो रहा है। इसके अतिरिक्त भित्ति चित्रों के फीके पड़ना। बड़े पैमाने पर उत्पादन और बाजारीकरण के कारण, कला का वैभवशाली सांस्कृतिक पैदावार सिर्फ एक वस्तु बन गया है। जिससे उसकी प्रथा और मूल्य खतरे में पड़ रहे हैं।

बाजारीकरण के कारण कला में प्रथाओं का वास्तव में पुनः प्रगति नहीं हो पा रहा है। आधुनिक रंगों और तकनीकों के प्रयोग ने कला की परंपरागत रचना पर असर डाला है जिससे उसकी सांस्कृतिक मूल्य नष्ट हो रहा है।

मिथिला लोक चित्रकला परंपरागत रूप से महिलाओं द्वारा की जाती थी, लेकिन बाजारीकरण के कारण यह कौशल नई पीढ़ी तक नहीं पहुंच पा रही है, जिससे यह कला धीरे–धीरे नष्ट होती जा रही है।

कला केवल एक दृश्य कला नहीं रह गई है, बल्कि उसके भीतर कहानी कहने, भावनाओं और धार्मिक पूजा पद्धति के माध्यम का एक गहरा अर्थ था, जो अब बड़े पैमाने पर प्रयोग के कारण खत्म होता जा रहा है।

परिकल्पना

यह कला शैव, शाक्त और वैष्णव धर्म आधारित है रामायण (जैसे राम–सीता विवाह, रावण वध) और महाभारत के संबंध के साथ–साथ विभिन्न देवी–देवताओं जैसे शिव, ब्राह्मा, दुर्गा, काली, गणेश और सरस्वती के चित्र निर्मित किये जाते है। सूर्य, चंद्रमा, फूल, पत्ती, फल और पक्षी जैसे प्राकृतिक तत्वों को चित्रों में भरा जाता है, जो एक आकर्षक रूप देते हैं।

खाली जगहों को भरने और चित्र को संपूर्णता देने के लिए ज्यामितीय संरचनाओं जैसे चौकोर, त्रिकोण और गोल आकृतियों का उपयोग किया जाता है।

बदलते समय के साथ, समसामयिक विषयों और स्थानीय सामाजिक व सांस्कृतिक घटनाओं को भी चित्रित किया जाता है।

शोध प्रविधि

यह शोध पत्र द्वितीय स्रोत पर आधारित है तथा द्वितीय स्रोत में जर्नल, पत्रिका, किताबें, मूवी आदि को शामिल किया गया है।

विश्लेषण

इस कला का विश्लेषण इसके विषय–वस्तु (धार्मिक, सामाजिक, प्रकृति, दैनिक जीवन), तकनीक व सामग्री (प्रकृतिक रंगों उंगलियों, ब्रश, निव दृपेन का प्रयोग), शैलियों (भरनी, तांत्रिक आदि), और बदलाव (भित्ति से कैनवास तक) के आधार पर किया जाता है।

निष्कर्ष

मिथिला लोक चित्रकला एक प्रथा है। 'लोक' शब्द हालाँकि एक से अधिक बोली जाने वाली है। लेकिन अभिप्राय ऐसे जन समूह से है जो शहरी सभ्यता के प्रभाव से परिचित नहीं है।

लोक कला के बारे में हमेशा ही जन साधारण की यह विचार धारा है कि जो राष्ट्र व समाज जितना अधिक लोक, संस्कृति, साहित्य और कला का अपने जीवन में उपयोग करने में सफल हैं, वह उतना ही उत्कृष्ट और सम्मानपूर्ण समझा जाता है, क्योंकि लोक कला अपनी सभ्यता संस्कृत में विशिष्टता एवं मंगलमय भावना को स्पष्ट करती है। मिथिला में अलग–अलग सामाजिक रीति–रीवाज, धार्मिक संस्कार और परंपरा से प्राप्त होने वाला विश्वास से संबंध रखने वाले लोक मान्यताओं की जड़े गहरी हैं।

मिथिला प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति की धारा को एक विशिष्ट पहचान देती है इस प्रकार यहाँ की चित्रशैली भी अपनी अलग पहचान रखती है।

सिफारिश

- मिथिला चित्रकला बिहार की सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक है, इसे बढ़ावा देने के लिए कलाकार, विद्वान और नीति निर्माता मिलकर प्रयास करें।
- जितवारपुर और रतनी जैसे गाँवों में स्थित प्रशिक्षण केन्द्रों के माध्यम से सभी जातियों की युवा लड़कियों को प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।
- जमुना देवी जैसी कलाकारों के मार्गदर्शन में बिना शुल्क के प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए, जिससे गुरू शिष्य परंपरा बनी रहे।
- सार्वजनिक स्थानों पर मधुबनी पेंटिंग को प्रदर्शित कर और विभिन्न मीडिया के माध्यम से लोगों में इसके प्रति जागरूकता बढ़ाई जाए।

संदर्भ सूचि

- डॉ. अयोध्यानाथ झा (2022), मिथिला लोक चित्रकला शैली, शशि प्रकाशन, नयी दिल्ली.
- डॉ. जय शंकर मिश्र 'भद्रेन्द्र' (2022, मिथिला की लोककला शैली, वन अलाइन पब्लिकेशन, दिल्ली.
- अवधेश अमन (1992), मिथिला की लोक चित्रकला सफलताएँ असफलताएँ, ललित कला अकादमी, नयी दिल्ली.
- डॉ. राय एवं महतो (2019), मिथिला की लोक संस्कृति, अभिषेक प्रकाशन, दिल्ली.